राजकीय एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन

सुरेन्द्र कुमार यादव

शोधछात्र (शिक्षाशास्त्र)
शिक्षक–शिक्षा संकाय
नेहरू ग्राम भारती डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी,
इलाहाबाद।

प्रस्तावना :

शिक्षा ही वह साधन है जिसके द्वारा मानव की पाशविक प्रवृत्तियाँ परिवर्तित एवं समायोजित होती हैं। आदिकाल से लेकर आधुनिककाल तक यह कार्य शिक्षा प्रक्रिया द्वारा ही समपन्न हो रहा है। शिक्षा के सम्बन्ध में प्रसिद्ध अर्थशास्त्री लॉक ने कहा था कि ''जिस प्रकार पौधों का विकास कृषि द्वारा होता है उसी प्रकार बालक का विकास शिक्षा होता है।'' **जॉन डी0वी0** ने भी शिक्षा के बारे में इसी प्रकार मत व्यक्त करते हुए का है कि ''शिक्षा एक गत्यात्मक प्रक्रिया है यह जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त चलती रहती है।'' इसी प्रकार अरविन्द ने शिक्षा के सम्बन्ध में अपना मत व्यक्त किया है– ''शिक्षा मानव के मस्तिष्क और आत्मा की शक्तियों का निर्माण करती है और उसमें ज्ञान, चरित्र और संस्कृति को जाग्रत करती है।'' इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए शिक्षा के सभी साधन सहायता करते हैं जिनमें प्रमुख साधन विद्यालय हैं। शिक्षा संस्थाओं का निर्माण समाज द्वारा इसी कारण किया गया है कि समाज के सदस्यों को आदर्श एवं कुशल नागरिक बनाया जा सके।

शिक्षा एवं संस्थाओं के कार्य के विषय में यूनेस्को की मूलभूत शिक्षा में कहा गया है कि– शिक्षा संस्थाओं का कार्य वे समाज के पुरूषों और स्त्रियों को पूर्ण एवं सुखद जीवन में सहायता करें। प्रसिद्ध शैक्षिक समाजशास्त्री **ओटावे के अनुसार**– ''विद्यालय को समाज की आवश्यकता को पूरा करने के लिए सामाजिक अधिकार समझा जाना चाहिए।'' वास्तव में विद्यालय समाज की देन है क्योंकि वे सामाजिक जीवन की आवश्यकता की पूर्ति करते हैं, इसलिए विद्यालय को लघु समाज कहा गया है।

प्राचीनकाल से लेकर आधुनिक समय तक विद्यालयों का अपना इतिहास है। वैदिककाल में विद्यालयी अध्ययन संस्कार के पश्चात् प्रारम्भ होती थी। प्राचीन काल के शिक्षा के केन्द्र आश्रम व गुरूकुल होते थे, जहाँ प्रबुद्ध शिक्षक शिक्षा देने का कार्य करते थे। इन आश्रमों व गुरूकुलों की व्यवस्था दान पर आधारित होती थी। मध्यकाल में शिक्षा का अर्थ बहुत संकुचित हो गया। मुस्लिम शासकों ने शिक्षा को धर्म से जोड़कर मकतब और मदरसों की व्यवस्था राज्य द्वारा होती थी। अंग्रेजों के शासनकाल में विद्यालयी शिक्षा को समुन्नत बनाने का प्रयास किया गया। 1854ई0 के वुड घोषणा पत्र के बाद क्रमवार विद्यालय स्थापित किये गये। स्वतंत्र भारत

Scanned with CamScanner

में विद्यालयी शिक्षा पर विशेष बल दिया गया। हमारे देश में शिक्षा की व्यवस्था के लिए अनेक संस्थायें कार्यरत हैं। प्रत्येक राज्य में शिक्षा प्रचार एवं प्रसार के लिए सरकारी विद्यालयों के अतिरिक्त अनेक अराजकीय विद्यालय जैसे– राजकीय, स्ववित्तपोषित विद्यालयों आदि। राजकीय एवं स्ववित्तपोषित में छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा के अनुसार विषयगत प्रश्न शोधकर्त्ता को यह जानने के लिये उत्साहित करते हैं कि वह यह देखे कि इस प्रकार के विद्यालयों में शैक्षिक अभिप्रेरणा होती है कि नहीं।

शिक्षा मानव के मस्तिष्क और आत्मा की शक्तियों का निर्माण करती है और उसमें ज्ञान, चरित्र और संस्कृति को जाग्रत करती है। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए शिक्षा के सभी साधन सहायता करते हैं जिनमें प्रमुख साधन विद्यालय हैं। शिक्षा संस्थाओं का निर्माण समाज द्वारा इसी कारण किया गया है कि समाज के सदस्यों को आदर्श एवं कुशल नागरिक बनाया जा सके।

अभिप्रेरणा एक ऐसी परिकल्पनात्मक प्रक्रिया है जो प्राणी के व्यवहार के निर्धारण व संचालन से सम्बन्ध रखती है। व्यवहार को अनुप्रेरित, सक्रिय, प्रारम्भ अथवा बनाए रखने वाले कारकों को अभिप्रेरणात्मक कारक कहा जाता है। अभिप्रेरणात्मक प्रक्रियाओं को इंगित करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है। वास्तव में यह एक आन्तरिक शक्ति होती हो जो प्राणी को किसी विशिष्ट प्रकार के कार्य को करने के लिए प्रेरित करती हैं। अभिप्रेरणा को प्रत्यक्ष निरीक्षण के द्वारा देखा जाना सम्भव नहीं हो पाता हैं प्राणी के व्यवहार का अवलोकन करके उसकी अभिप्रेरणा को समझा जा सकता है। अभिप्रेरणा वास्तव में क्यों के प्रश्न का उत्तर देती है। व्यक्ति खाना क्यों खाता है? व्यक्ति दूसरों से क्यों लड़ता है? व्यक्ति उच्च पदों पर क्यों जाना चाहता है? जैसे प्रश्नों का उत्तर अभिप्रेरणा से सम्बन्धित है। मनोवैज्ञानिकों ने अभिप्रेरणा शब्दों को भिन्न–भिन्न ढंग से परिभाषित किया है। गुड के अनुसार – ''अभिप्रेरणा किसी कार्य को प्रारम्भ करने जारी रखने अथवा नियंत्रित करने की प्रक्रिया है।''

वैसे भी सामान्यतः यह देखा जाता है कि माध्यमिक स्तर पर अपव्यय तथा अवरोधन की समस्या के अतिरिक्त शैक्षिक अभिप्रेरणा को प्रभावित करने वाले अनेक कारक उत्तरदायी हैं। जैसे– सामाजिक आर्थिक स्थिति, भौगोलिक दशायें, जनसंचार साधनों से पृथकता, अप्रांसगिक पाठ्यक्रम, अनुपयुक्त शिक्षण विधियाँ बालकों के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति, रुचि, बुद्धि आकांक्षा स्तर तथा उच्च मानसिक योग्यता एवं निम्न मानसिक योग्यता, विद्यालय का सामाजिक–मनोवैज्ञानिक पर्यावरण, गृह–पर्यावरण, समायोजन एवं माता–पिता का प्रोत्साहन इत्यादि।

समस्या कथन

प्रस्तुत अध्ययन का शीर्षक निम्नलिखित है –

''राजकीय एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन।''

अध्ययन के उद्देश्य :

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है–

Scanned with CamScanner

1. राजकीय तथा स्ववित्तपोषित के छात्रों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. राजकीय तथा स्ववित्तपोषित की छात्राओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. राजकीय तथा स्ववित्तपोषित के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ :

प्रस्तुत अध्ययन की परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं –

1. राजकीय तथा स्ववित्तपोषित के छात्रों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर है।
2. राजकीय तथा स्ववित्तपोषित की छात्राओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर है।
3. राजकीय तथा स्ववित्तपोषित के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर है।

शोध प्रविधि :

वर्तमान समय की समस्याओं के अध्ययन के लिए विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि ही उपयुक्त होती है क्योंकि सर्वेक्षण के अन्तर्गत अध्ययन के लिए सम्भावयता सिद्धान्त के आधार पर केवल एक जनसंख्या के प्रतिदर्शन द्वारा शैक्षिक क्षेत्र से सम्बन्धित समस्या के बारे में प्रतिनिध आंकड़े संकलित किये जा सकते हैं जो सम्बन्धित समष्टि के स्वरूप को लगभग पूर्ण रूपेण प्रतिबिम्बि करते हैं। प्रस्तुत अध्ययन के सन्दर्भ में अध्ययनकर्ता ने संभाविता प्रतिदर्शन के साधारण यादृच्छिक प्रतिदर्शन प्रविधि का प्रयोग किया है। प्रतिदर्श का चुनाव करने हेतु सर्वप्रथम इलाहाबाद शहर के राजकीय तथा स्ववित्तपोषित विद्यालयों में से समय व सुविधा को दृष्टिगत रखते हुए 2–2 विद्यालयों का चयन लाटरी पद्धति से किया है 2 राजकीय से 50 छात्र–छात्राएं, तथा 2 स्ववित्तपोषित से 50 छात्र–छात्राएं का चयन प्रतिदर्श के रूप में किया था। इस प्रकार कुल 100 छात्रा/छात्राओं को अध्ययन के प्रतिदर्श के रूप में लिया गया है। उपकरण के रूप में डॉ0 टी0आर0 शर्मा द्वारा निर्मित **'एकेडमिक अचीवमेंट मोटीवेशन टेस्ट'** का प्रयोग किया गया है। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु टी–अनुपात सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

H_1 : राजकीय एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर है।

H_{01} : राजकीय एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी 1

राजकीय एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धी प्राप्तांकों (मध्यमान, मानक विचलन तथा t-मान) का मान

क्रमांक	चर	संख्या	मध्यमान	मानक	t-मान	सार्थकता

Scanned with CamScanner

		(N)	(M)	विचलन (S.D)		स्तर
1.	राजकीय के विद्यार्थी	50	28.18	2.33	4.49	सार्थक
2.	स्ववित्तपोषित के विद्यार्थी	50	30.52	2.86		

उपर्युक्त तालिका सं0 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि t का परिकलित मान 4.49 है जो सार्थकता स्तर 0.05 तथा मुक्तांश (df) 98 के सारणी मान 1.98 से अधिक है, अर्थात् मध्यमानों के बीच सार्थक अन्तर है। अतः शून्य परिकल्पना (H_{01}) अस्वीकृत तथा शोध परिकल्पना (H_1) स्वीकृत होती हैं अर्थात् राजकीय एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में अन्तर है अर्थात् स्ववित्तपोषित विद्यालयों के विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च पायी गयी।

H_2 : राजकीय एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर है।

H_{02} : राजकीय एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी 2

राजकीय एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धी प्राप्तांकों (मध्यमान, मानक विचलन तथा t-मान) का मान

क्रमांक	चर	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D)	t-मान	सार्थकता स्तर
1.	राजकीय के छात्र	25	27.32	2.29	3.68	सार्थक
2.	स्ववित्तपोषित के छात्र	25	30.36	3.33		

उपर्युक्त तालिका सं0 2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि t का परिकलित मान 3.68 है जो सार्थकता स्तर 0.05 तथा मुक्तांश (df) 48 के सारणी मान 2.01 से अधिक है, अर्थात् मध्यमानों के बीच सार्थक अन्तर है। अतः शून्य परिकल्पना (H_{02}) अस्वीकृत तथा शोध परिकल्पना (H_2) स्वीकृत होती हैं अर्थात् राजकीय एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में अन्तर है अर्थात् स्ववित्तपोषित विद्यालयों के विद्यालयों की के विद्यार्थियों शैक्षिक अभिप्रेरणा राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च पायी गयी।

H_3 : राजकीय एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर है।

H_{03} : राजकीय एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

Scanned with CamScanner

सारणी 3

राजकीय एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा से सम्बन्धी प्राप्तांकों (मध्यमान, मानक विचलन तथा t-मान) का मान

क्रमांक	चर	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D)	t-मान	सार्थकता स्तर
1.	राजकीय की छात्राएँ	25	29.04	2.07	1.99	असार्थक
2.	स्ववित्तपोषित की छात्राएँ	25	30.68	2.17		

उपर्युक्त तालिका सं0 3 के अवलोकन से स्पष्ट है कि t का परिकलित मान 1.99 है जो सार्थकता स्तर 0.05 तथा मुक्तांश (df) 48 के सारणी मान 2.01 से कम है, अर्थात् मध्यमानों के बीच सार्थक अन्तर नही है। अतः शून्य परिकल्पना (H_{03}) स्वीकृत तथा शोध परिकल्पना (H_3) अस्वीकृत होती हैं अर्थात् राजकीय एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों की छात्राओं की उच्च शैक्षिक अभिप्रेरणा में कोई अन्तर नहीं है अर्थात् दोनों में समानता है।

अध्ययन के परिणाम :

प्रस्तुत अध्ययन में परीक्षण के प्रशासन से प्राप्त आँकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण से निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए–

- राजकीय एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में अन्तर है अर्थात् स्ववित्तपोषित विद्यालयों के विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च पायी गयी।
- राजकीय एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में अन्तर है अर्थात् स्ववित्तपोषित विद्यालयों के विद्यालयों की के विद्यार्थियों शैक्षिक अभिप्रेरणा राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च पायी गयी।
- राजकीय एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों की छात्राओं की उच्च शैक्षिक अभिप्रेरणा में कोई अन्तर नहीं है अर्थात् दोनों में समानता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

- अग्रवाल, के0 एल0 (1986) विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर पितृ–प्रोत्साहन के प्रभावों का एक अध्ययन, पी0–एच0 डी0 शिक्षाशास्त्र, गढ़वाल यूनिवर्सिटी।
- अरोरा, रीता (1988), उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के लड़के–लडकियों की शैक्षिक उपलब्धि में अभिभावकों बच्चों का सम्बन्ध और शिक्षक–शिक्षार्थी के सम्बन्ध की भूमिका, पी0–एच0 डी0 साइकालॉजी, आगरा यूनिवर्सिटी।

Scanned with CamScanner

- मुखोपाध्याय, दिलीप कुमार (1989) माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की कुछ व्यक्तिगत विशेषताओं के विकास और शैक्षिक उपलब्धि पर वातावरण के प्रभाव का अध्ययन, पी0एच0डी0 शिक्षाशास्त्र विश्वभारती यूनिवर्सिटी।
- रामचन्द्रन आर0 (1990) शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा और दूसरे मनोवैज्ञानिक कारको–तर्कशक्ति, चिन्ता और समायोजन के बीच सम्बन्धो का अध्ययन, एम0फिल0 शिक्षाशास्त्र, अन्नामलाई यूनिवर्सिटी।
- अग्रवाल, रेखा एवं कपूर, माला (1998) प्राइमरी स्तर पर बच्चों के शैक्षिक क्रिया कलाप में अभिभावक की सहभागिता उनकी शैक्षिक स्थिति के बीच सम्बन्ध, *जर्नल ऑफ इण्डियन एजूकेशन*, वाल्यूम–4।
- मोहन्ती, डी0 (2000) 'स्कूल टाइप सॉइकेलॉजीकल डिफरेस्टिएयन एण्ड एचीवमेन्ट ऑफ ट्राइबल एण्ड नॉन ट्राइबल चिल्ड्रेन, पी0एच0डी0 शिक्षाशास्त्र, उत्कल यूनिवर्सिटी।
- अग्रवाल, आर0पी0 (2002) सम कोरिलेट्स ऑफ एकेडमिक एचीवमेन्ट मोटीवेशन, पी0एच0डी0 थीसिस शिक्षाशास्त्र, लखनऊ यूनिवर्सिटी।
- लाल, छामू (2002) इफैक्टव ऑफ अचीवमेंट मोटिवेशन एण्ड सोशियो– इकोनॉमिक स्टेटस ऑन स्पोर्ट्स परफार्मेन्स ऑफ स्पोर्ट्स वुमेन, पी0एच0डी0 फिजिकल एजूकेशन, बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी।

Scanned with CamScanner